International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

विश्व भाषा की ओर हिंदी के बढ़ते कदम

डॉ. पोरिका नागमणी

सहायक अद्यापिका (हिन्दी विभाग), शास्क्रीया स्नातक महाविध्यालय मुलुगु, मुलुगु जिला

सृष्टि के निर्माण काल से ही भाषा का संबंध मानव समाज से रहा है। मानव जीवन में भाषा एक अभिन्न अंग है, जिसके बिना मानव गूंगा है। इस विश्व में कई महाद्वीप, राष्ट्र प्रांत है। भारतेंदुहरिश्चंद का कथन "चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी/बीस कोस पर पगड़ी बदले, तीस कोस पर धानी" आज भी चरितार्थ हो रहा है। विदेशों से व्यापार करने के लिए संप्रेषण के लिए आवश्यकतानुसार भाषा अपनानी पड़ती है। उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री और उनके प्रचार के लिए अपनाये जाने वाले साधनों में स्थानीय भाषा का उपयोग होता है। भारत में इस कार्य के लिए अधिकतर हिंदी का उपयोग हो रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपना माल बेचने के लिए हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएं अपना रही है।

विश्व भाषा की परिकल्पना और हिंदी

आज संचार साधनों की बदौलत स्थानों के बीच की दूरियां बेमानी हो गई है या यह भी कह सकते हैं कि एक तरह से मिट गई है। संपूर्ण विश्व एक गांव बन गया है, जिसमें कभी भी, कहीं से भी किसी से भी तत्काल संपर्क स्थापित हो सकता है यदि आपके पास उसके लिए अपेक्षित साधन हो। यह भी भविष्यवाणी की जा रही है कि वैश्वीकरण के इस दौर में विश्व की दस भाषाएं ही जीवित रहेगी, जिनमें हिंदी भी एक होगी। वैश्वीकरण एवं बाजार वाद के संदर्भ में हिंदी का महत्व इसलिए बढ़ेगा क्योंकि भविष्य में भारत व्यावसायिक, व्यापारिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से एक विकसित देश होगा।

विश्व भाषाएं तो विश्व की उस प्रत्येक भाषा को कहा जा सकता है. जिसमें प्रयोक्ता एकाधिक देशों में बसे हुए है किंतु विश्व भाषा पद की वास्तविक अधिकारिणी में भाषाएं हैं. जो विश्व के

अधिकतर देशों में पढ़ी लिखी, बोली सुनी और समझी जाती है। वस्तुतः प्रत्येक विश्व भाषा के प्रमुख कार्य होते हैं बोलचाल एवं जनसंपर्क, साहित्य सृजन, शिक्षा एवं जन संचार माध्यम प्रशासनिक कामकाज व्यावसायिक और तकनीकी अनुप्रयोग और विश्वबोध या वैश्विक चेतना।

विश्वभाषा से अपेक्षाएं होती है कि उसे बोलने-समझने वालों का विस्तृत भौगोलिक विस्तार हो आज भारत के बाहर नेपाल, भूटान, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, हांगकांग, फीजीमॉरीशस, ट्रिनीडाड, गयानासूरीनामइंग्लैंड, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका में हिंदी भाषी वाँ प्रचुर संख्या में हैं दूसरी अपेक्षा है कि. वह भाषा लचीली हो, उसमें भिन्न संदर्भों की अभिव्यक्ति की क्षमता हो, उसका एक सर्वस्वीकृत मानक रूप हो, उसमेउपमानकों की कुछ दूर तक स्वीकृति होते हुए भी परस्पर संप्रेषण यता किसी-न-किसी स्वीकृत हिंदी में यह गुण भी हैं।

हिंदी में ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, पहाड़ी, बुंदेली, बघेली, मागधी, छत्तीसगढ़ी और जाने कितनी उपजन भाषाओं के शब्द भंडार मुहावरे और उसकी नोकोक्तियां रच-बस गई है। इसके अलावा हिंदी भाषा का भारत की अन्य भाषाओं के साथ शताब्दियों घनिष्ठ संपर्क रहा है विश्वभाषा से तीसरी अपेक्षा है के भाषा में विश्व मन का भाव हो। हिंदी भाषी अपने देश भी अनेक राज्यों में निवास करने के कारण प्रांतीयता ऊपर उठा हुआ है और उसके पास ऐसे साहित्य की शाल परंपरा है, जो विश्व के पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रयुक्त भाषाएं

संयुक्त राष्ट्र की प्रक्रिया नियम 51 से 57 में संयुक्त राष्ट्रसंघकी महासभा तथा इसकी विभिन्न समितियों एवं उपसमितियों के लिए आधिकारिक तथा कार्य संचालन की भाषाओं की व्यवस्था की गई है। संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रथम अधिवेशन में अंतरराष्ट्रीय न्यायालय को मोड़कर इसके सभी संगठन के लिए अंग्रेजी और को आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार

किया गया था वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र संघ की यह आधिकारिक भाषाएं है। अरबी को यूएन की ऑफिशियल का दर्जा वर्ष 1973 में मिला राष्ट्र संघ में एक महत्वपूर्ण देश है। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाए जाने की मुहिम की शुरूआत भारत के नागपुर में 10 जनवरी 1973 को आयोजित प्रथम हिंदी में हुई थी श्री संयुक्त राष्ट्र संघ में वर्ष 1927 में विदेश मंत्री के तौर पर और वर्ष 2002 में प्रधानमंत्री के तौर पर हिंदी में भाषण दिया था वर्ष 2003 में सूरीनाम से विश्व हिंदी को विश्वाषा का दर्जा मिलना चाहिए।

03 जनवरी 2018 को में पूछे गए प्रश्न के जवाब में विदेश मंत्री, श्रीमती सुषमा ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी को स्थान दिलाने के लिए कुल 193 सदस्य देशों में से दो तिहाई बहुत यानी न्यूनतम 129 सदस्य देशों के समर्थन की आवश्यकता है। इसके साथ ही हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा की मान्यता दिए जाने के बाद होने भी भारत को ही उठाना होगा। एक अनुमान के अनुसार इसके लिए शुरू में लगभग एक अरब रुपये खर्च करने होंगे।

हिंन्दीविश्वएभाषकी और - सकारात्मक प्रवृत्तियां

हिंदी एक विश्वभाषा है, यह एक देश की राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ अन्य देशों में भी पर्याप्त संख्या में लोगों द्वारा लिखी बोली और समझी जाती है। करण पर हिंदी के प्रति सकारात्मक इस प्रकार दिखाई दे रही है -

- भौगोलिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि इसके बोलने-समझने वाले संसार के सब महाद्वीप में फैले है।

- जनतांत्रिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि उसके बोलने-समझने वालों की संख्या संसार में तीसरी है।

- विश्व के 132 देशों में जा बसे भारतीय मूल लगभग 2 करोड़ लोग हिंदी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं ।

- एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिंदी एशियाई भाषाओं से अधिक एशिया की प्रतिनिधि भाषा है।

- हिंदी का किसी देशी या विदेशी भाषा से कोई विरोध नहीं है। अनेक भाषाओं के द होकर हिंदीमय बन गए है। यही कारण है कि आज हिंदी का शब्दकोश विश्व का सबसे बड़ा भाषिक शब्दकोश है।

- हिंदी स्वयं में अपने भीतर एक अन्तरराष्ट्रीय जगत छिपाए हुए है। आवासी स्पेनीपुर्तगालीजर्मनी फारसी, चीनी, जापानी सारे संसार की भाषाओं के शब्द इसकी अन्तरराष्ट्रीय मैत्री एवं वसुकुटुम्बकम बाली प्रवृत्ति को उजागर करते हैं।

- हिंदी का साहित्येतर लेखन बढ़ा है तथा लेखन का स्तर भी ऊंचा होता जा रहा है।

- गुणवता की दृष्टि है अनुवाद की स्थिति बेहतर होती जा रही है। लघु पत्रिकाओं में मौलिक और अनुवाद के प्रकाशन का स्वागत और स्वीकार्यता बढ़ती जा रही है।

- प्रवासी भारतीय (एनआरआई) देवीकरण का सबसे प्रत्यक्ष वाहक लगते हैं और आडियो-वीडियो और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से उसके बीच हिंदी एक जीवंत कड़ी बन रही है।

- इंटरनेट पर हिंदी भी स्वीकार्य और लोकप्रिय हो रही है। हिंदी पत्रकारिता और हिंदी साहित्य भी अब इंटरनेट के माध्यम से विश्वभर में प्रसारित होने लगा है

- देश-विदेश में प्रकाशित होने वाले पत्र-पत्रिकाओं ने हिंदी को विश्वभाषा बनाया है। इसके द्वारा हिंदी भाषा और साहित्य का प्रसार विदेशों में हुआ है ।

- भारत के आकाश्वाणी और दूरदर्शन हिंदी को विश्व स्थर पर स्थापित करने में निरंतर कार्यता हैं । विश्व के टी. वी चैनलों से हिंदी के कार्यक्रमों का प्रसारण ने भी हिंदी को विश्व भाषा बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

- हिंदी की व्यापकता के कारण दुनिया के 175 देशों में हिंदी के शिक्षण एवं प्रशिक्षन विश्व के लगभग 180 विश्वंविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थाओं में रहा है। सिर्फ अमरीका में 100 से अधिक विश्वविद्यालयों, कॉलेजों में हिंदी पढाई जा रही है। इसका हिन्दी का वर्चस्व दिनोंदिनबढता जा रहा है।

- "एनाकाटीर, एनसाइक्लोपीडिया" के अनुसार चीनी भाषा के संसार में प्रयुक्त होने वाली सबसे बड़ी भाषा हिंदी है। हिंदी के बाद क्रमश: स्पेनिश, अंग्रेज़ी, अरबी, रूसी और फ्रांसीसी भाषाओं का स्थान आता है।

विश्व भाषा के रूप में हिंदी के समक्ष समस्या

विश्वभाषा के रूप में हिंदी के समक्ष अन्य अनेक समस्याएं हैं, जैसे-विदेशों से जिस अनुपात में भारतीय हिंदी संस्कृति का हास और पश्चिमी भोगवादी सभ्यता का विकास होता चला जा रहा है, उसी मात्र में हिंदी का प्रचलन काफी कम होता जा रहा है। भारत से प्रवजन पलायन करने वाले युवा बुद्धिजीवियों और श्रमिकों पर यह भाषा टिकी हूई है किन्तु बड़ी तेजी से अंग्रेज़ियत

के रंग में रंगते जा रहे है। उनकी अगली पीढ़ी हिंदी से अपरिचित-सी है । जब इसे संविधान में भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया तो ऐसा माना जाने लगा कि इसे देर-सबेर संयुक्त राष्ट्र संघ एवं संसार की अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं-संस्थानों में भी स्थान मिलेगा और अंतरराष्ट्रीय संपर्क की भाषा के रूप में इसे भी मान्यता प्राप्त होगी लेकिन ऐसा नहीं हो सका है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के व्यापक प्रचार- प्रसार के निमित अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है, यथासंभव अनुदान भी दिया गया किन्तु जिस लक्ष्य को लेकर उसकी स्थापना की गई थी वह अपनी लक्ष्य सिद्धि तक नहीं पहुंच सका है। भारत विश्व बाजार की टेक्नॉलोजी से जुड़ तो रहा है पर केवल अंग्रेजी के माध्यम से । हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की इन आधुनिक संचार साधनों में उपस्थिति काफी कम है।

विज्ञापन एजेंसियों में सारे विज्ञापन पहले अंग्रेजी मे बनते हैं बाद में जैसे-तैसे उनका काम चलाऊ अनुवाद कर दिया जाता है। सरकारी कार्यालय में हिंदी के नाम पर अनुवाद की ऐसी कृत्रिम और अटपटी भाषा तैयार हुई है, जो आम जनता के लिए अंग्रेजी जितनी ही दुरुह है। हिंदी और अंग्रेजी को अजीबो-गरीब खिचड़ी की भाषा गढ़ी जा रही है। विश्व बाजार की नई स्थितियों में यही हिंदी भाषा की सबसे की विम्बना है। हिंदी केवल माल बेचने की भाषा बन रही है।

कानून के क्षेत्र में हिंदी की स्थिति खराब है। अभी तक उच्च न्यायालयों से हिंदी का प्रयोग कहीं-कहीं ही हो रहा है।न्यायालय की वाँ भाषा तो संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार अंग्रेजी ही है जो कानूनी पुस्तके नियम अधिनियम आदि हिंदी में है उनका उपयोग नहीं हो पा रहा है और न ही अधिनियमों आदि की हिंदी भाषा लोगों की समझ में आती है। अटपटे और विलष्टों से युक्त कानूनी पुस्तकों की हिंदी बहुत-से हिंदी प्रेमियों के मन में भी अरुचि पैदा करती है।

विश्व व्यापार आयात-निर्यात के क्षेत्रों में दस्तावेज आदि के लिए प्रयुक्त मानक पर आदि मात्र दिखाया बनकर रह गये हैं, उनका उपयोग बहुत ही कम हो रहा है। ऐसे में विश्व बाजार से जुड़े कानूनी दाव पेंचों, विश्व व्यापार संगठन के समझौतों, उनके संबद्ध दस्तावेजों और उस समस्त प्रक्रिया में हिंदी प्रयोग की कल्पना करना कठिन है।

हिंदी को विश्वभाषा बनाने के लिए सुझाव

10 जनवरी को विश्व के लगभग 180 देशों में हिंदी दिवस मनाया जाता है। वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य जब हम विदेश में हिंदी की बात करते है तो हमारा तात्पर्य विदेश में हिंदी भाषा के अधिक से-अधिक प्रसार के साथ ही विविध क्षेत्रों में हिंदी के उपयोग से है। इसके प्रसार और उपयोग में कई कठिनाइयां है, जिनके समाधान की आवश्यक है। इसमें से कुछ इस प्रकार है:-

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी की भूमिका सार्थक हो तथा उसका प्रयोग बढ़ सके इसके लिए पहली आवश्यकता हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि के मानकीकरण की है। केन्द्रीय हिंदी निदेशालय मे जो लिपि का मानकीकरण किया उसका उपयोग निदेशालय के अलावा कहीं नहीं होता। यहाँ तक कि सरकारी प्रकाशनों में भी नहीं निजी प्रकाशकों की बात तो छोड़ दीजिए यही स्थिति हिंदी भाषा की मौ है। हिंदी देश की संविधान स्वीकृत राजा किन्तु मानकीकरण की बात प्रशासकीय स्तर पर कोई नहीं सोचता।

हिंदी के सामने अन्य हिंदी भाषा का विदेशी भाषा के रूप में विधिवत शिक्षण-प्रशिक्षण है। देश में हिंदी का ऐसा कोई भी भाषा शिक्षण संस्थान नहीं है, जिसमें विदेशियों के लिए हिंदी भाषा के ऐसे विविध पाठ्यक्रम हो, जिनको पूरा कर कोई भी विदेशी छात्र हिंदी माध्यम से चलने वाले चिकित्सा, इंजीनियरी तथा अन्य विज्ञान के विषयों को पढ़ने-समझने की अपेक्षित योग्यता प्राप्त कर सके या फिर कोई विदेशी अल्प समय में भाषा पर इतना अधिकार प्राप्त

कर सके कि वह भारत में यात्रा कर सके अपने उपयोग की सामग्री खोज सके, हिंदी समाचारपत्र पढ़कर भारत के समाचार जान सके।

विदेशी हिंदी प्रशिक्षकों के लिए नाच पाठ्यक्रम हो जिनमें उनकी समस्याओं पर विचार हो और जनवरीके से अपेक्षित के लिए विशिष्ट पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक तैयार की जाए। विश्व में हिंदी का प्रचार हो हिंदी अध्ययन अनुसंधान की दिशा में प्रगति हो इसके लिए आवश्यक है कि हिंदी के संदर्भ ग्रंथ तैयार किए जाएं यह भी निश्चित है कि हिंदी भाषा और उसे बोलने वालों की जिजीविषा उसे मरने नहीं देगी लेकिन इसके लिए उसे पहले अपनी डुलमुल मानसिकता, दुविधा, अस्पष्ट चितन और तनावपूर्णमनः स्थितियों से मुक्ति प्राप्त करनी होगी। इसका एक रास्ता अपनी जहाँ और अपनी बोलियों की वापसी भी।

सूचना के युग में हिंदी को मलीकरण की प्रक्रिया से अपनी भूमिका का महत्व बताना हो अतः इसे कंप्यूटर की भी भाषा बनाना होगा। हिंदी में ऐसे सॉफ्टवेयर विकसित करने होंगे जिनसे स्तर पर सूचनाओं का आदान-प्रदान करना और नौ आसानी से समय हो सके। हिंदी कंप्यूटप्रोग्रामिंग की रूपरचना और हिंदी कूटपसाक्षरों का प्रचलन होना चाहिए। भूमंडलीकरण प्रक्रिया से हम अपने यहां के उत्पादों पर लेबलिंग हिंदी से करेंगे तो निश्चित ही इससे हिंदी का प्रचार-प्रसार भी हो या अन्य पदार्थ जैसे उप वर्ग की अनिवार्य वस्तुएं आदि।

अनुवादक और अनुवाद के उपकरण तथा दुभाषियों की लम्बी श्रृंखला चाहिए। यही सब हिंदी को अन्य विश्व भाषाओं के समक्ष खड़ा कर सकेगा। विदेशों में हिंदी मुद्रण-टंकण, अशुलेखन की सुविधा का विस्तार होना चाहिए। हिंदी को कालजयी कृतियों का विभिन्न भाषाओं से रूपान्तर की व्यवस्था होनी चाहिए। विदेशों में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों का प्रकाशन तथा उनकी सुलभ बिक्री-वितरण होना चाहिए। विश्वभाषाओं से संबंधित द्विभाषी , त्रिभाषी और बहुभाषी शब्दकोश, विश्वकोश का सम्पादन-प्रकाशन होना चाहिए।

हिंदी का विदेशों में बढ़ता प्रभाव

हिंदी भारतवासियों की संपर्क भाषा तो बन ही चुकी है और अब विभाषा बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही है। अब हिंदी भले ही संयुक्त राष्ट्र सं की अधिकारिक भाषा नहीं है परंतु व्यावहारिक स्तर प उसकी सभी एजेंसियों की मान्य भाषा है। संयुक्त राष्ट्र संघ हिंदी में नियमित रूप से एक साप्ताहिक कार्यक्रम प्रस्तुत करता है, जो इसकी वेबसाइट पर उपलब्ध है। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए समन प्रयास जिए जा रहे है। जिन देशों में हिंदी बोली और पढ़ी-लिखी जाती है उन देशों का एक संगठन बनाने का प्रयास भी भारत सरकार कर रही है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति देने के लिए विदेश मंत्रालय में "हिंदी एवं संस्कृत प्रभाग का गठन किया गया है। यह विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न गतिविधियों को संयोजित करता है। यह अपने विदेश स्थित दूतावासों के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार में जुटी संस्थाओं को हिंदी कक्षाएं आयोजित करने एवं अन्य गतिविधियों के लिए अनुदान देता है। साथ ही यह विदेशों में अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलनों का आयोजन भी करता है।

आज हिंदी बारह से अधिक देशों में बहुसंख्यक समाज की मुख्य भाषा है। आज सात समुद्र पार तक एक चौथाई दुनिया में उसका परचम लहरा रहा है। अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, दक्षिण अफ्रीका नेपाल मॉरीशस, न्यूजीलैंड, सिंगापुर यमन युगांडा इन दस देशों में हिंदी भाषी भारतीयों की जनसंख्या दो करोड़ है फिजी, गुखाना, सूरीनामटायोगोट्रिनिडाड तथा अरब अमीरात इन छह देशों में हिंदी को अल्पसंख्यक भाषा के रूप में संवैधानिक दर्जा प्राप्त है। भारत से बाहर जिन देशों में हिंदी का बोलने, लिखने-पढ़ने तथा अध्ययन और अध्यापन की दृष्टि से प्रयोग होता है उन्हें हम इन वर्गों में बाट सकते हैं-

- जहां भारतीय मूल के लोग अधिक संख्या में रहते है जैसे पाकिस्तान नेपाल, भूटान देश म्यांमार, श्रीलंका और मालदीव आदि।

- भारतीय संस्कृति से प्रभावित दक्षिण पूर्वी एशियाई देश, इंडोनेशिया, मलेशिया साईलैंड चीन, मंगोलिया, कोरिया आदि।

- जहां हिंदी को विश्व की आधुनिक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है अमेरिका आस्ट्रेलियाकनाडा और यूरोप के देश ।

- अरब और अन्य इस्लामी देश जैसे संयुक्त अरब (दुबई), अनिस्तान, कतर, मिरा, उजबेकिस्तान, कजाकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान आदि।